IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 7, July 2024
Impact Factor: 5.731

अमृतलाल नागर के उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याओं का अध्ययन

भारती पूनियां[1] डॉ. सुरेश कड़वासरा[2]

[1] शोधार्थी [2] शोध निर्देशक

विभाग हिंदी विभाग हिंदी

श्री खुशाल दास, विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़, राजस्थान

शोध आलेख सार

स्त्री और पुरुष सृष्टि के आधार हैं। एक के अभाव में दूसरे का जीवन असहाय व असम्भव है। दोनों के साथ चलने से ही परिवार और समाज की गाड़ी चलती है। पुरुष जहॉ परिवार की आर्थिक जरूरतों को पूरा करता है वहीं स्त्री सन्तति का पालन–पोषण का दायित्व निभाती है, किन्तु पुरुष ने सदैव ही नारी की इस महत्ता को नकारा और अपने को सर्वेसर्वा मानने का दम्भ पाला। इसी सोच के कारण नारी के जीवन में अनेकानेक समस्याऍ उत्पन्न हुई और उसका जीवन दयनीय होता गया।

मूल शब्द – नारी समस्या।

भूमिका –

अमृतलाल नागर नारी की असहायावस्था व अधिकार हीन स्थिति से अत्यन्त चिन्तित व व्याकुल दिखाई देते हैं। उनके अधिकांश उपन्यासों में नारी की समस्याऍ उजागर ही नहीं हुई हैं वरन् उनके प्रति सहानुभूति भी व्यक्त हुई है। उनके उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याओं का विवेचन इस प्रकार है–

यौन शोषण

यौन संबंध प्रकृति का सहज सत्य है। मानव के विकास में यौन संबंध महत्त्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते हैं। भारतीय संस्कृति ने नैतिकता का पालन करते हुए यौन संबंध बनाने से पूर्व विवाह संस्था की स्थापना की। विवाह के पश्चात् पति–पत्नी के मध्य बनने वाले यौन सम्बंधों को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हुई। विश्व स्तर पर भारतीय संस्कृति की सराहना इसलिए भी की जाती है कि यहॉ विवाह के पश्चात् ही यौन संबंध स्थापित किए जाते हैं, जिसे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं संतति को प्राप्त करने की दृष्टि से मान्यता प्राप्त है। पश्चिमीकरण एवं आधुनिकरण के परिणाम स्वरूप विवाह संस्था एवं यौन संबंधों में विकृति आई है। गॉधी जी विवाह तथा यौन संबंधों के विषय में कहते हैं ''विवाह केवल स्त्री–पुरुष को निकट लाने की स्थिति है . . .

विवाह की धारणा में कहीं भी भोग–विलास को प्रविष्ट नहीं होने देना चाहिए। स्त्री–पुरुष के शारीरिक संबंध केवल संतानोत्पत्ति के लिए ही स्थापित होने चाहिए, न कि भोग–विलास के लिए।'' यौन संबंधों में जब वासना एवं अधिकार की प्रवृत्ति आ जाये तो इसकी पवित्रता नष्ट हो जाती है और नारी को यह संबंध दुखदायी प्रतीत होते हैं। भारतीय संस्कृति में कुछ रिश्ते ऐसे माने गए हैं जिनमें यौन संबंधों का निषेध किया गया है, जैसे– भाई–बहिन, बाप–बेटी, व मॉ–बेटे का रिश्ता पवित्र माना जाता है किंतु औद्योगिक और वैज्ञानिक प्रगति के साथ–साथ पारिवारिक रिश्तों की पवित्रता मलिन होती जा रही है।

Copyright to IJETIR
www.iciset.in

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 7, July 2024
Impact Factor: 5.731

अमृतलाल नागर अपने उपन्यासों में यौन समस्या को यथार्थ रूप में चित्रित करते हैं। उनके 'बूँद और समुद्र' उपन्यास का महिपाल अपने वैवाहिक जीवन में भी प्रेमिका की अनिवार्यता को स्वीकार करता है। महिपाल और उसकी पत्नी कल्याणी में मानसिक असन्तुलन के प्रमुख कारण दोनों पति–पत्नी में सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता है। महिपाल कल्याणी को छोड़कर शीला से प्रेम करता है। वह सज्जन से कहता है – ''शीला मेरे लिए नशे की तरह जरूरी है। यह तमाम ऊपरी नशे – तुम जानते हो कि मैं इनका गुलाम नहीं हूँ। मगर शीला ऊपरी नशा भर नहीं है उसका संबंध मेरे अंतर से है। जितनी उखड़ी, थकी हुई जिन्दगी को लेकर मैं दिन–रात संघर्ष करता हूँ, उसकी तुमने शायद कभी सपने में भी कल्पना नहीं की होगी।

शीला मेरे थके हुए घायल अहंकार का बल है।'' जब महिपाल शीला से कहता है कि मुझे अपने मन में बैठे हुए खुदा से डर लगता है। वह मुझे बार–बार कहता है कि तुम गलत कर रहे हो
और किसी का अधिकार हरण कर रहे हो। तब शीला इस शंका का समाधान करते हुए प्रेम एवं यौन को शारीरिक आवश्यकता स्वीकार करती है। वह इस सम्बन्ध को नैतिकता व अनैतिकता के घेरे से बाहर निकालती है ''तुम जिसे अधिकार हरण की बात कर रहे हो, मैं उसे अहमियत नहीं देती। हम एक दूसरे की रूहानी जरूरतों को पूरा करते हैं। जिन्हें पूरा करना हर एक का पैदाइशी हक होता है। मैं अपने और तुम्हारे नाते को पाप नहीं मानती।''

महत्व –

अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यासों में अनमेल विवाह की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है। उनके 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास की निर्गुणियॉ की पारिवारिक परिस्थितियॉ बहुत विषम हैं। वयः सन्धि में निर्गुणियॉ ऐसे परिवेश में प्रवेश करती है। जहॉ काम सम्बन्धो मूल्यों की पूर्ण अराजकता एवं मूल्यहीनता का बोलबाला था। उसके पिता वहॉ न केवल साधारण नौकर हैं, वरन् अपनी स्वामिन के रखैल भी हैं। जब स्वामिन निर्गुण को अपने काम सम्बन्धों में बाधक समझती है, उस समय उसका विवाह अपने पुराने बूढ़े प्रेमी मसुरियादीन से करा देती है। जो उम्र में उसके पिता से भी सात वर्ष बड़ा है। यहीं से निर्गुणियॉ के जीवन की त्रासदी प्रारम्भ होती है। कहॉ यौवन की देहरी पर पॉव रखती सोलह वर्ष की निर्गुण, कहॉ उसके पिता के उम्र से भी छह–सात साल बड़े, कब्र मैं पैर लटकाए मसुरियादीन जो उसकी दैहिक एवं मानसिक क्षुधा को परितृप्त करने में पूर्ण रूप से अक्षम है। परिणामतः निर्गुण विद्रोह कर मोहन मेहतर से विवाह कर लेती है।

'कवरट' उपन्यास में प्रगतिशील विचारों की चंपकलता अनमेल विवाह का सशक्त शब्दों में विरोध करती है ''हमें समाजी बुराईयों पर चुप नहीं बैठे रहना चाहिए। मैं एक परचा लिखूँगी और छाप के सारी बिरादरी में गलियों, मौहल्लों की दूसरी बिरादरियों में भी उसे बटाऊँगी। भली यह भी कोई बात हुई कि एक बारह बरस की कुँवारी कच्ची कली–सी लड़की पचास बरस के बूढ़े बन्दर के साथ ब्याह दी जाय।'' वास्तव में माता–पिता अपनी लड़की का मात्र विवाह कर देना अपना कर्तव्य समझते हैं। लड़की का विवाह करके वे मानों अपने सिर से बहुत बड़ा बोझा उतारकर निश्चिन्त हो जाते हैं। यदि विवाह असफल रहा तो उसके लिए अपने दोष न देखकर, भाग्य को कोसते हैं।

'बूँद और समुद्र' उपन्यास के महिपाल का विवाह उसके माता–पिता की इच्छा से होता है। वह अपनी पत्नी कल्याणी से संतुष्ट नहीं है। वह अतिशय भावुक एवं साहित्यकार है और उसकी पत्नी अशिक्षित एवं फूहड़। महिपाल के अहं की तुष्टि कल्याणी के आश्रय में न होकर शीला के आश्रय में होती है। शीला ही उसकी वास्तविक पत्नी है, वह अपने असफल विवाह के सम्बन्ध में कहता है ''मेरी शादी असफल रही, जैसे माता–पिता द्वारा तय की गई शादियॉ आम तौर पर होती है। हमारे अस्सी फीसदी घरों में शादियॉ जीवन भर के कर्ज की तरह निभाई जाती हैं। नतीजा यह होता है कि कहीं पति कहीं पत्नी और कहीं पति–पत्नी दोनों एक दूसरे की पीठ पीछे व्यभिचार करते हैं।''

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 7, July 2024
Impact Factor: 5.731

इस प्रकार अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यासों में अनमेल विवाह का विरोध किया है और आज धीरे–धीरे यह समस्या भी कम हो रही है। स्त्री शिक्षा से स्त्रियों में जागृति आयी है। वे अपने अधिकारों के बारे में स्वयं सचेत हुई हैं।

दहेज समस्या

मनुष्य के जीवन में विवाह एक महत्वपूर्ण घटना है, जो मनुष्य को एक पवित्र बंधन में बॉध कर रास्ते का राहगीर बना देता है। भारतीय समाज में विवाह अधिकतर माता–पिता की इच्छानुसार होते हैं, ''विवाह में प्रत्येक माता–पिता की कामना होती है कि वे अपने पुत्र या पुत्री को सर्वश्रेष्ठ जीवन साथी दे। भारतीय परम्परानुसार विवाह के अवसर पर प्रत्येक माता–पिता अपनी पुत्री को भावी जीवन आरम्भ करने हेतु कुछ वस्तुएँ और धनादि प्रदान करते थे और इसी परम्परा ने आज दहेज का रूप धारण कर लिया है। दहेज हमारे समाज की एक विकराल समस्या है, जिसके कारण भारतीय समाज में स्त्री–पुरुष अनुपात ही गड़बड़ा गया है। इसी समस्या के कारण कन्या भ्रूण हत्या की जाती है।

आज घर–घर में दहेज समस्या एक ज्वलंत समस्या के रूप में देखी जाती है। दहेज की समस्या ने पुत्री के जन्म को ही अभिशाप बना दिया है। लड़की का जन्म होते ही मॉ–बाप लड़की के दहेज और शादी के बारे में सोचने लग जाते हैं और लड़की को एक बोझ की तरह समझने लगते हैं। दहेज समाज में एक दानव के रूप में प्रचलित है। दहेज लोभियों के लिए योग्य लड़की भी कुछ माइने नहीं रखती।

विवाह संदर्भ में दहेज प्रथा समाज के माथे पर कलंक है। यह वह पिशाच है, जो नारी की दयनीय स्थिति के लिए उत्तरदायी है। मध्यवर्ग में पुत्री के विवाह के लिए माता–पिता की चिन्ता इस सामाजिक कुप्रथा के कारण ही है। समाज को इस कुरीति ने इतनी मजबूती से जकड़ रखा है कि निकट भविष्य में इससे मुक्ति पाना असंम्भव है। अमृतलाल नागर ने अपने उपन्यासों में दहेज प्रथा की समस्या को गंभीरता से उठाया है।

'अमृत और विष' उपन्यास का रमेश अपनी बहन का विवाह अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही करना चाहता है। उधार के प्रति उसकी घोर अनास्था, है, किन्तु समधी साहब धन–सम्पन्न और शिक्षित होते हुए भी दहेज में विश्वास रखते हैं, वे कन्या पक्ष को अंग्रेजी भाषा में पत्र लिखते हैं . . .

''रेडियो, घड़ी और फाउण्टेन पेन तो लड़के के लिए अनिवार्य है, और आपकी लड़की के वास्ते मेरी राय से निम्नलिखित सामान अवश्य होना चाहिए एक सिलाई की मशीन, एक सिंगार मेज, एक गोदरेज की आलमारी जिसमें कि हमारे यहॉ से पाई हुई बहुमूल्य साड़ियों को सहेजकर रख सके।''

इसी प्रकार 'बूँद और समुद्र' में भी शकुन्तला को देखने के लिए मुरादाबाद से आये हुए महाशय कट्टर सुधारवादी और दहेज विरोधी होने का ढिढोरा पीटकर भी अपने लड़के की बिक्री के दाम नहीं वरन् अपनी लड़की के विवाह निमित्त 'केवल' आठ हजार रूपयों की मॉग करते हैं।'' ''महिपाल कार खरीदना चाहकर भी इसलिए नहीं खरीदता कि यदि शकुन्तला की शादी से पहले कार खरीद ली तो लड़के वाले कार देखकर कहीं अधिक दहेज की मॉग न कर बैठे।'' दहेज देने में समर्थ माता–पिता अपनी पुत्री के लिए योग्य वर खोज सकते हैं किन्तु धनाभाव के कारण मध्यवर्ग में पुत्री विवाह एक ज्वलंत समस्या है।

अमृतलाल नागर दहेज की इस कुप्रथा को सामाजिक विकृति तो मानते हैं, उसके आर्थिक पक्ष को भी अपनी दृष्टि से ओझल नहीं होने देते। 'बूँद और समुद्र' उपन्यास में उन्होंने इसके आर्थिक पक्ष पर जोर दिया है। मध्यवर्गीय समाज के लिए कन्या का विवाह हर्षोल्लास का नहीं दुःख एवं आघात का कारण बनता है। बेटी वाला उधार के कारण निरन्तर महाजन के शिकंजे में कसता चला जाता है। इसी स्थिति पर महिपाल अपनी वेदना को इन शब्दों में वाणी देता है – ''यह छाती पीटने

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 7, July 2024
Impact Factor: 5.731

वालों की दुनिया है और वो इस समय लड़खड़ा रहीं है। जानती हो लोग शादी ब्याह कैसे करते हैं? जीवन के मंगल संस्कार और उत्सव लोग कैसे मना रहे हैं? उधार लेकर। अपने चिंता, अपमान और ऑसुओं में पूरी तरह डूबकर।''

'करवट' उपन्यास में दहेज प्रथा के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट हस्सोमल व उसकी पत्नी दोनों के प्राण हर लेता है – ''हस्सोमल की बड़ी बेटी कित्तो का ब्याह सद्दोमल के बेटे गोपीनाथ से तय हुआ। हालांकि ब्याज बहुत खर्चीला नहीं था, फिर भी हस्सोमल की छोटी सी गोटे पट्टे की दुकान बिक गई। दुकान बेचने पर पत्नी से कलह हुई जिसके कारण हस्सोमल जहर खाकर मर गये। नय आये हुए वैधव्य का दुःख, अपने मन की ग्लानि और आर्थिक संकटों की विषमता ने हस्सोमल की पत्नी के प्राण भी अचानक ही ले लिया।''

'अग्निगर्भा' उपन्यास के माध्यम से नागर ने भारतीय समाज में दहेज और नारी दमन के निकृष्टतम रूपों से साक्षात्कार कराया है। इस उपन्यास का रामेश्वर अपनी माता के सामने जब अपने विवाह का प्रस्ताव रखता है तो उसकी मॉ सीता से विवाह का विरोध करती है, क्योंकि वह अपने साथ कम दहेज लायेगी। रामेश्वर की माता कहती है ''मिजाज हम कोऊक न बिगाडब भुला दहेज तक मरजद के बता है। चार जने ऊंगली उठैये कि लरिका मॉ ऐसे कौन खोट रहा जौ दहेज न मॉगिन। हम एक लाख ते कम न लेब, चाहे ईकान ते सुना चाहे उयि कान ते सुना? एक बहुरिया तो हमारे हाथ से निकलि गई। दूसर की का अपनी मर्जी ते राखव। ईना तुम्हार कि रामे क्यार जिद न चले।''

रामेश्वर का कथन भी वर्तमान युवकों की लालची एवं स्वार्थी प्रवृत्ति की ओर संकेत करता है। ''हॉ वह तो सब सही है, लेकिन भाई, लड़की के फादर को कुछ दहेज तो देना ही चाहिए। मैं मम्मी की इस बात को भला कैसे काट सकता हूँ। चलन तो चलन है।'' पुत्र के विवाह में अधिकाधिक धन लेना माता–पिता अपना अधिकार समझते हैं। इतना ही नहीं इसको उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न भी बना लिया है। पुत्र के विवाह में जितना अधिक दहेज आता है, वह उतना ही प्रतिष्ठावान है।

सीता ऐसी नारी है जो दहेज के लिए पुरुष की कामुक, स्वार्थी, जघन्य और घिनौनी इच्छाओं की शिकार होती है। जीवन पर्यन्त धैर्यशील बनकर पुरुष समाज के अत्याचारों को सहन करती है। उसके हृदय में

अन्याय के विरूद्ध जो ज्वालाएँ उत्पन्न होती हैं वह अनवरत समेटती जाती है और अन्त में अग्निगर्भा बनने के लिए विवश हो जाती है। अपने अत्याचारों का विरोध करती है। इसके लिए उसे संघर्ष का सामना करना पड़ता है। कन्या के जन्म पर हर्षित न होकर, पुत्र जन्म का उत्सव मनाना इस पक्ष को व्यक्त करता है कि पुत्र के जन्म पर प्रसन्नता है पुत्र पर सदैव माता–पिता का अधिकार बना रहता है, साथ ही पुत्र के पीछे सदैव सम्पत्ति, और लक्ष्मी आती है। इसी संदर्भ को उजागर करने हेतु 'करवट' उपन्यास में नागर ने इस मानसिता को वाणी दी हैं– 'पोती तो मेरे लिए प्यारी होगी, मगर पोता तो पोता ही होता है, यह आप भी जानते हैं समधी साहब।''

समाज में जहॉ पुत्र का स्वस्थ शारीरिक विकास प्रसन्नता का विषय है, वहीं पुत्री का चिन्ता का विषय बनता है। सेठ बांकेमल कहते है ''पंडित देवी दयाल के पास एक छदाम नहीं है, और तो जो लोंडियों का ब्याह करना चाहें। छोरियॉ जो हौवे हैं भैइयो तो ताड़ की तरह बढ़े है। खट्ट दीनी बारह बरस की हो गई। पंडत को रात में नींद न आवे।''

इस प्रकार अमृतलाल नागर ने दहेज प्रथा को घिनौनी एवं अमानवीयतापूर्ण बताया है। प्राणघाती दहेज के दुष्परिणामों से समाज को अभिशप्त होने से बचाने हेतु नागर ने क्रांतिकारी कदम तो अपनी लेखनी के माध्यम से उठाये ही हैं उन्होंने नारी जागृति लाने की भी चेष्टा की है। साथ ही समग्र जन–मानस को प्रबुद्ध कर, उस कलंक की विषैली काली छाया से बचने की शक्ति प्रदान की है।

IJETIR
ISSN (Online) 2583-0554
International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (IJETIR)
Volume 4, Issue 7, July 2024
Impact Factor: 5.731

सारांश –

भारत में नारी आर्थिक दृष्टि से पराधीन रही है। आर्थिक पराधीनता के कारण वह एक ओर शोषण का शिकार रही है और दूसरी और आत्म निर्भर होने से वंचित रह गई है। इसिलिए वह अर्थ की दृष्टि से सदैव से पुत्र, पति और पिता के अधीन रही है। नागर ने अपने उपन्यासों में नारी की आर्थिक पराधीनता व शोषण का यथार्थ रूप में चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अमृतलाल नागर : जिनके साथ जिया, प्रकाशक– राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली, संस्करण–1973
2. अमृतलाल नागर : रचना संचयन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
3. अमृतलाल नागर : अमृतलाल सूक्ति, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2007
4. अज्ञेय : नदी के द्वीप, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संस्करण–2015
5. आशारानी व्होरा : औरत कल आज और कल, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, संस्करण–2005
6. आशारानी व्होरा : नारी शोषण आइने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, द्वितीय संस्करण–199670. आशारानी व्होरा : भारतीय नारी : दशा–दिशा, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, संस्करण–1983
8. उपेन्द्रनाथ 'अश्क' : गर्म राख, प्रकाशक नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–1978
9. उर्मिला देवी : अमृतलाल नागर के उपन्यासों में मध्यवर्ग, वनस्थली विद्यापीठ, संस्करण–2005
10. डॉ. कविता भट्ट : उपेन्द्रनाथ अश्क के उपन्यासों में मध्यवर्ग, प्रकाशक– क्लासिक पब्लिकेशन्स, जयपुर, प्रथम संस्करण–2003